

# ‘आर्मी डे परेड ने देशभक्ति व सैन्य गौरव की भावना को जन-जन तक पहुंचाया’

## मुख्यमंत्री भजनलाल ने सेना दिवस परेड -2026 संकलन पुस्तक व लघु फिल्म का विमोचन किया

जयपुर, 06 मार्च। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि 78वें सेना दिवस पर आयोजित हुई ऐतिहासिक आर्मी डे परेड ने भारतीय सेना और जनमानस के बीच संबन्धने का काम किया तथा इस परेड ने राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति और सैन्य गौरव की भावना को जन-जन तक पहुंचाया। उन्होंने कहा कि देश में पहली बार आर्मी डे परेड का छावनी क्षेत्र के बाहर आम नागरिकों के बीच जयपुर में सम्पन्न होना हम सब के लिए गौरव की बात है।

शर्मा शुक्रवार को मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि जन भागीदारी ही किसी भी राष्ट्रीय उत्सव की असली शक्ति होती है। आर्मी डे परेड को आम लोगों ने अपने स्नेह और उत्साह से सफल बनाया।



मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 78वें सेना दिवस पर “आर्मी डे परेड संकलन” पुस्तक का विमोचन किया। इस दौरान सतशक्ति कमान के सेना कमाण्डर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह और मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास भी उपस्थित रहे।

शुरुआत की है।

शर्मा ने कहा कि जनभागीदारी ही किसी भी राष्ट्रीय उत्सव की असली शक्ति होती है। आर्मी डे परेड को आम लोगों ने अपने स्नेह और उत्साह से सफल बनाया। उन्होंने इस परेड की सफलता को विभिन्न विभागों के समन्वय का परिणाम बताया। उन्होंने

भारतीय सेना के सभी सैनिकों और अधिकारियों का अभिनेदन किया और कहा कि सेना का अनुशासन व समर्पण राष्ट्र के लिए प्रेरणा का स्रोत है तथा उनके कठिन परिश्रम ने इस परेड को उत्कृष्ट बनाया।

शर्मा ने सेना दिवस परेड-2026 की संकलन पुस्तक एवं लघु फिल्म का

विमोचन किया। इस दौरान कार्यक्रम में लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया।

इस अवसर पर मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास, सतशक्ति कमान के सेना कमाण्डर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह, विभिन्न विभागों के अधिकारी सहित, सेना के अधिकारी भी उपस्थित थे।

कार्यालय में सेना दिवस परेड-2026 संकलन पुस्तक एवं लघु फिल्म के विमोचन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 15 जनवरी 2026 की तारीख राजस्थान के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गई है। भव्य और व्यापक आर्मी डे परेड आयोजित कर हमने राजस्थान में नई परंपरा की

## ‘मैं कांग्रेस का राज्यसभा का ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

घर की छत पर इसी पार्टी का झंडा फहराया करता था।

बाद में वे कांग्रेस में शामिल हुए और फिर के. राजू, एक पूर्व आईएएस अधिकारी से मिले, जो सभी उपरोक्त हुए दलितों के गाँवफादर हैं और राहुल गांधी के चारों ओर दलितों की एक दुनिया बनाने की कोशिश कर रहे हैं, "दलितों के लिए, दलितों द्वारा, दलितों के साथ।"

के. राजू ने उन्हें राहुल गांधी से मिलवाया और उन्हें राज्यसभा भेजने के लिए मनाया।

राहुल गांधी ने हरियाणा के किसी वरिष्ठ नेता से सलाह लिए बिना ही अपनी सहमति दे दी।

करमवीर बौद ने भूपेंद्र सिंह हुड्डा को फोन किया और उन्हें सूचित किया कि "मैं करमवीर बौद हूँ और मैं राज्यसभा का उम्मीदवार हूँ, कल नामांकन दाखिल करने के लिए आइए।" हुड्डा जो हैरान रह गए और सामान्य होने में समय लिया।

इसी तरह रणदीप सिंह सुरजेवाला, शैलजा और हरियाणा के अन्य पार्टी नेताओं के साथ भी हुआ।

नेता असमंजस में रहे, विधायक नहीं जानते थे कि वे कौन हैं, लेकिन राहुल गांधी खुश हैं कि उन्हें केंद्र दलित मिल गया जो उनके एजेंडा के अनुरूप है।

इस एजेंडा के प्रति वे बेहद जूनूनी हैं और किसी भी कीमत पर इसे लागू करना चाहते हैं।

के. राजू वे व्यक्ति हैं जो कांग्रेस में

हरियाणा में राज्यसभा चुनाव का नतीजा इस सवाल का जवाब ढूँढने में शायद कुछ मदद करेगा।

दलितों के नरेटिव को नियंत्रित करना चाहते हैं। वे पार्टी में स्थापित दलित नेताओं, जैसे उदय भान और अशोक तंवर को प्रोत्साहित नहीं करना चाहते। वे एक नए व्यक्ति को चाहते थे, जिसे वह नियंत्रित कर सकें।

ठीक है यह भी, लेकिन क्या राहुल गांधी कोई विचार नहीं करते, या क्या उनका विचार इतना अंधा है कि वे हर निर्णय को के.सी. वेणुगोपाल, के. राजू या "जय जगत" जैसे को सौंपते रहते हैं?

जय जगत अपनी ताकत दिखा रहा है और यह संकेत देना चाहता है कि वह पार्टी में निर्णयों को नियंत्रित कर रहा है और वह बाँस है क्योंकि बाँस उसके साथ है।

जय जगत ने तमिलनाडु की राज्यसभा सीट भी हासिल कर ली है, जो एक ईसाई दलित को मिली है, जो जय जगत से है और के. राजू द्वारा समर्थित है।

भाजपा ने कांग्रेस के आधिकारिक उम्मीदवार को हराने के लिए एक स्वतंत्र उम्मीदवार खड़ा किया है, जो बुनियादी तौर पर भाजपा से है, उसके पास ढेर सारा पैसा है और वह कांग्रेस के

विधायकों को खरीदने के लिए तैयार है। क्या राहुल गांधी जीवन से कोई सबक नहीं सीखते? या क्या वे बस इस कारण से परवाह नहीं करते, क्योंकि वे इतने विशेषाधिकार प्राप्त हैं? हरियाणा का घटनाक्रम रोमांचक रहेगा, क्योंकि यहां पैसा, सत्ता, निराशा और गुस्से का खेल होगा।

## कोटा का डॉक्टर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सिविल सेवा के लिए चयनित किया गया था, जहां वे वर्तमान में प्रशिक्षण ले रहे हैं।

स्व-अनुशासन और दृढ़ता में विश्वास रखने वाले अनुज ने अपनी तैयारी के लिए ऑनलाइन कोचिंग पर भरोसा किया और दिल्ली के "एचयोर" आईएएस से इंटरव्यू हाइड्रेस प्राप्त की।

साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले अनुज के पिता कोटा में न्यूक्लियर पावर प्लांट में काम करते हैं, जबकि उनकी मां गृहिणी हैं। कुल 958 उम्मीदवारों ने आईएएस, आईएफएस, आईपीएस और अन्य सेवाओं के लिए क्वालीफाई किया है। परीक्षा में शामिल होने वाले उम्मीदवार यूपीएससी की आधिकारिक वेबसाइटों पर रोल नंबर के आधार पर परिणाम देख सकते हैं और डाउनलोड कर सकते हैं।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

खेड़ा ने कहा कि जब रूस भारत को तेल देने के लिए तैयार था, तब मोदी सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया, लेकिन अमेरिका की अनुमति मिलने के बाद ही सरकार सक्रिय हुई। अमेरिका ने भारत को छूट दी है, जबकि छूट वहीं दी जाती है, जहां प्रतिबंध लागू होते हैं।

यूपीएससी ने एक बयान में कहा, "अंक, परिणाम का घोषणा के 15 दिनों के भीतर वेबसाइट पर उपलब्ध होंगे।"

लिखित सीएसई परीक्षा अगस्त 2025 में आयोजित की गई थी, जबकि व्यक्तिगत परीक्षा (पर्सनैलिटी टेस्ट) दिसंबर 2025 से फरवरी 2026 के बीच हुआ था। अनुज के अलावा प्रदेश के दस अन्य अभ्यर्थियों का भी चयन हुआ है। ये हैं, बहरोड़ के तरुण चावड़ा (49 वीं रैंक), बालोतरा के गौरव चोपड़ा (83 वीं रैंक), बूंदी के सौरभ शर्मा (146 वीं रैंक), तिजारा के निशांत यादव (237 वीं रैंक), बालोतरा के जितेंद्र प्रजापति (287 वीं रैंक), पोकरण के प्रवीण दानरत्न (499 वीं रैंक), सीकर के संजय कुमार (502 वीं रैंक), जयपुर के संभव पांडे (608 वीं रैंक), तिजारा के बादल यादव (665 वीं रैंक), दौसा के आशीष शर्मा (722 वीं रैंक)।

## बिहार में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चुनाव करो। इस संदर्भ में सीमा गुप्ता का नाम उछाला जा रहा है, जो संघ पृष्ठभूमि से बताई जाती है।

नीतीश कुमार को उखाड़ फेंकने के लिए ताकत जुटाने के बाद, यह निश्चित माना जा रहा है कि भाजपा अपने उम्मीदवार को मुख्यमंत्री के रूप में स्थापित करेगी। हालांकि, यह भी संभव है कि कुमार के बेटे को सत्ता की राजनीति में लाया जाये और नई सरकार में उपमुख्यमंत्री बनाया जाए।

राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में एक नया और अप्रत्याशित चेहरा चुनकर भाजपा यह राजनीतिक संदेश दे सकती है कि बिहार में पूरी तरह से नयी शुरुआत की जा रही है। इन परिदृश्यों में नई सरकार को भाजपा नेतृत्व का प्रत्यक्ष आशीर्वाद प्राप्त भी माना जाएगा। वहीं, ऐसी सम्भावना नहीं है कि नेतृत्व जेडीयू की विभाजित करने की कोशिशों में लगेगी। हालांकि नीतीश कुमार जैसे किसी प्रभावशाली नेता के बिना पार्टी के पास लंबी अवधि तक अस्तित्व में रह पाना मुश्किल होगा। कुमार अब भी ईबीसी वर्ग में लोकप्रिय हैं और पिछले वर्षों में उन्होंने महिला वोटर्स में एक मजबूत समर्थन आधार बनाया है। भाजपा इन वर्गों का समर्थन खोना नहीं चाहेगी। इसलिए, यह संभावना है कि भाजपा नेतृत्व कुमार के साथ सदाशयतापूर्ण और सुलझे हुये तरीके से ही पेश आएगा। इसके साथ ही, यह भी संभावना है कि समाजवादी पृष्ठभूमि के चलते बिहार में हिंदुत्व के कट्टर संस्करण को फिलहाल नहीं उतारा जाएगा।

## प्रधानमंत्री ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बढ़ाया जो इस बार अपेक्षित परिणाम हासिल नहीं कर सके। उन्होंने कहा कि ऐसे क्षण कठिन हो सकते हैं, लेकिन यह यात्रा का केवल एक पड़ाव है और अगर अनेक अवसर उपलब्ध हैं।

## ईरान ने बहरीन, कतर व यूएई पर हमले तेज किए

तेहरान/तेल अवीव, 06 मार्च। अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच जारी सैन्य संघर्ष ने पश्चिम एशिया के अधिकांश इलाके को अपनी चपेट में ले लिया है। ईरान खाड़ी के देशों में स्थित अमेरिकी सैन्य ठिकानों और उससे संबंधित इलाकों को लगातार निशाना बना रहा है। गुरुवार देर रात बहरीन की राजधानी मनामा में फाईनैशियल हाबर्न टावरस को निशाना बनाया गया। वहीं बहरीन, कतर, सऊदी अरब और जॉर्डन

अमेरिका और इजराइल के संयुक्त हमले के बाद ईरान ने बदले की कार्यवाही में कई पड़ोसी देशों को निशाना बनाया

में एयर डिफेंस सिस्टम लगातार उसके हमलों को इंटरसेप्ट कर रहे हैं। मौजूदा हालात के मद्देनजर कई देशों ने सुरक्षा अलर्ट जारी कर लोगों से घरों में रहने की अपील की है।

सऊदी अरब के रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को बताया कि सेंट्रल अल-खाज गवर्नरट के पूर्व में एक क्रूज मिसाइल को इंटरसेप्ट कर दिया। बाद में मंत्रालय ने यह भी जानकारी दी कि रियाद क्षेत्र के पूर्व में तीन ड्रोन को भी मार गिराया गया।

उधर कतर के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि उसकी एयर डिफेंस फोर्स ने दोहा स्थित अल उदीद एयर बेस को निशाना बनाकर किए गए एक ड्रोन हमले को विफल कर दिया। यह एयर बेस अमेरिका के लिए एक महत्वपूर्ण सैन्य ठिकाना माना जाता है। दोहा में सुबह करीब 4 बजे घमाकों की जोरदार आवाजें सुनीं गयीं, जो ईरान से आए ड्रोन को इंटरसेप्ट करने के दौरान हुई थीं। पिछले पांच दिनों में सैन्य बेस को निशाना बनाकर दो बैलिस्टिक मिसाइलें दागी गईं।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सहित कई नेताओं ने असम के कार्बी आंगलों जिले में हुए लड़ाकू विमान हादसे में वायु सेना के दो पायलटों की शहादत पर दुःख व्यक्त किया।

राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि सुखोई-30 विमान हादसे में दोनों पायलटों स्क्वाड्रन लीडर अनुज और फ्लाइट लेफ्टिनेंट पूर्वश दुरागकर के निधन की खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ। देश के लिए उनकी हिम्मत और सेवा को हमेशा गर्व और आभार के साथ याद

राजनाथ सिंह और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सहित कई नेताओं ने असम के कार्बी आंगलों जिले में हुए लड़ाकू विमान हादसे में वायु सेना के दो पायलटों की शहादत पर दुःख व्यक्त किया।

राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि सुखोई-30 विमान हादसे में दोनों पायलटों स्क्वाड्रन लीडर अनुज और फ्लाइट लेफ्टिनेंट पूर्वश दुरागकर के निधन की खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ। देश के लिए उनकी हिम्मत और सेवा को हमेशा गर्व और आभार के साथ याद

राजनाथ सिंह और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सहित कई नेताओं ने असम के कार्बी आंगलों जिले में हुए लड़ाकू विमान हादसे में वायु सेना के दो पायलटों की शहादत पर दुःख व्यक्त किया।

राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि सुखोई-30 विमान हादसे में दोनों पायलटों स्क्वाड्रन लीडर अनुज और फ्लाइट लेफ्टिनेंट पूर्वश दुरागकर के निधन की खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ। देश के लिए उनकी हिम्मत और सेवा को हमेशा गर्व और आभार के साथ याद

राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि सुखोई-30 विमान हादसे में दोनों पायलटों स्क्वाड्रन लीडर अनुज और फ्लाइट लेफ्टिनेंट पूर्वश दुरागकर के निधन की खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ। देश के लिए उनकी हिम्मत और सेवा को हमेशा गर्व और आभार के साथ याद

राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि सुखोई-30 विमान हादसे में दोनों पायलटों स्क्वाड्रन लीडर अनुज और फ्लाइट लेफ्टिनेंट पूर्वश दुरागकर के निधन की खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ। देश के लिए उनकी हिम्मत और सेवा को हमेशा गर्व और आभार के साथ याद

## सुखोई-30 फाइटर जैट क्रैश, दोनों पायलट की मौत

### वायु सेना की टीम को हादसा स्थल तक पहुंचने में चार घंटे का समय लगा

कार्बी आंगलों (असम), 06 मार्च। असम के कार्बी आंगलों जिले के पहाड़ी इलाके में गुरुवार देर शाम को सुखोई-30 एमकेआई फाइटर एयरक्राफ्ट के क्रैश होने से दोनों पायलटों की मौत हो गई।

दोनों की पहचान स्क्वाड्रन लीडर अनुज और को-पायलट लेफ्टिनेंट पूर्वश दुरागकर के रूप में हुई है। लेफ्टिनेंट पूर्वश भारतीय वायु सेना में फ्लाईंग नेविगटर थे। हादसे की आधिकारिक जानकारी आईएफएफ ने सोशल मीडिया एक्स के जरिए दी है। दुर्घटना स्थल से दोनों वायु सैन्य कर्मियों के शव मिल गए हैं।

भारतीय वायु सेना (आईएफएफ) की एक्स पोस्ट में भारतीय वायु सेना ने

जोरहट से टेकऑफ करने के कुछ देर बाद ही प्लेन कार्बी आंगलों जिले के दुर्गम पहाड़ी इलाके में क्रैश हो गया।

स्क्वाड्रन लीडर अनुज और फ्लाइट लेफ्टिनेंट पूर्वश दुरागकर के निधन की जानकारी दी गई है। कहा गया है कि दोनों को सुखोई-30 दुर्घटना में घातक चोट आई।

हादसा गुरुवार रात लगभग 7 बजे के आसपास हुआ। विमान से चढ़के टूटने के बाद जोरहाट वायुसेना की टीम ने दुर्घटना स्थल पर पहुंचकर खानबीन

शुरू की। हादसास्थल पर वायु सेना की टीम को पहुंचने में लगभग चार घंटे का समय लगा। हालांकि, हादसे के कारणों का पता नहीं चल सका है।

बताया गया है कि जोरहाट से टेकऑफ करने के कुछ ही देर बाद प्लेन कार्बी आंगलों जिले के दुर्गम पहाड़ी इलाके में क्रैश हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस अधिकारियों ने तुरंत सर्च और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया।

सूत्रों ने बताया कि एयरक्राफ्ट सुखोई-30 एमकेआई फाइटर जेट था, जिसने शाम को जोरहाट से उड़ान भरी थी। क्रैश साइट इनसानी आबादी से दूर एक जंगली और पहाड़ी इलाके में है, जिससे जहां के लोगों के लिए एहतियात पायलटों को श्रद्धांजलि दी

## राजनाथ सिंह व राहुल गांधी ने लड़ाकू विमान हादसे के पायलटों को श्रद्धांजलि दी

नई दिल्ली, 06 मार्च। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सहित कई नेताओं ने असम के कार्बी आंगलों जिले में हुए लड़ाकू विमान हादसे में वायु सेना के दो पायलटों की शहादत पर दुःख व्यक्त किया।

राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि सुखोई-30 विमान हादसे में दोनों पायलटों स्क्वाड्रन लीडर अनुज और फ्लाइट लेफ्टिनेंट पूर्वश दुरागकर के निधन की खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ। देश के लिए उनकी हिम्मत और सेवा को हमेशा गर्व और आभार के साथ याद

रक्षा मंत्री ने कहा कि दोनों पायलटों को उनकी हिम्मत और सेवा के लिए हमेशा आभार व गर्व के साथ याद किया जायेगा।

किया जाएगा। दुखी परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं। दुख की इस घड़ी में देश उनके साथ मजबूती से खड़ा है।

राहुल गांधी ने अपनी शोक संवेदना में कहा कि भारतीय वायुसेना के वीर जवान स्क्वाड्रन लीडर अनुज और

फ्लाइट लेफ्टिनेंट पूर्वश का विमान दुर्घटना में शहीद होने का समाचार अत्यंत दुःख और पीड़ादायक है। इन वीर सपूतों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और शोक संतप परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूँ।

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड़ा ने कहा कि असम में हुई विमान दुर्घटना में दोनों वीर जवानों की शहादत का समाचार अत्यंत दुःख है। उन्होंने ईश्वर से दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए शोक-संतप परिवारों को इस कठिन समय में संबल प्रदान करने की कामना की।

## ‘अमेरिका ने दया की, भारत को रूस से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साद अल कार्बी ने यह भी कहा कि अगर संघर्ष तुरंत समाप्त हो भी जाता है तो कतर को अपनी सामान्य आपूर्ति व्यवस्था को बहाल करने में "हफ्तों से महीनों" तक का समय लागेगा।

भारत में सभी तेल रिफाइनरियों से कहा गया है कि वे "यह सुनिश्चित करें कि उनके पास उपलब्ध प्रोपेन और ब्यूटेन का उपयोग रसोई गैस उत्पादन के लिए किया जाए।" सामान्यतः भारत की अधिकांश एलपीजी मध्य पूर्व से ही आती है, जो प्रोपेन और ब्यूटेन का मिश्रण होता है।

भारत ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए भारतीय रिफाइनरियों को पहले से समुद्र में मौजूद रूसी मूल खरीदने के लिए एक शॉर्ट-टर्म छूट देना है। ट्रेडरों सहित स्कोर्ट बैसेंट ने कहा, "वैश्विक बाजार में तेल की आपूर्ति बनाए रखने के लिए, ट्रेडरों विभाग भारतीय रिफाइनरियों को रूसी तेल खरीदने की अनुमति देने के लिए अस्थायी तौर पर 30 दिन की छूट दे रहा है।"

"उन्होंने कहा जानवृक्षकर यह

शॉर्ट-टर्म छूट दी गई है क्योंकि इससे रूस को कोले लाभ नहीं होगा। क्योंकि यह केवल समुद्र में पहले से फंसे हुए तेल की खरीद फरोख्त की अनुमति देता है।

बेसेंट ने इस छूट को एक अस्थायी उपाय के रूप में वर्णित किया, जबकि वॉशिंगटन भारत को अधिक अमेरिकी कच्चा तेल खरीदने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास कर रहा है।

उन्होंने "यह अस्थायी उपाय ईरान द्वारा वैश्विक ऊर्जा को बंधक बनाने के प्रयास के कारण उत्पन्न दबाव को कम करेगा," उन्होंने कहा।

गल्फ क्षेत्र में यूएस-इजराइल और ईरान के बीच चल रहे युद्ध के आर्थिक प्रभाव को लेकर चिंता बढ़ती जा रही है। होमजुज जलसंधि मार्ग भारत के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत कच्चे तेल और एलएनजी दोनों के लिए खाड़ी उत्पादकों पर भारी निर्भर है।

भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों का लगभग 85 प्रतिशत और एलएनजी की जरूरत का 45 से 50 प्रतिशत आयात करता है। भारत के तेल आयात का लगभग 90 प्रतिशत सामान्यतः होमजुज से गुजरता है, जहां टैंकर ट्रेडिंग अब ठप हो चुका है।

चूंकि भारत द्वारा खरीदी जा रही

कच्चे तेल की शिपमेंट पहले से ही बाजार में मौजूद हैं, दिल्ली की मौजूदा कीमतों पर भुगतान करना होगा, बजाय इससे कि वह रूस से पहले की तरह रियायती दरों पर सौदा कर सके।

यह भारत के लिए बुरी खबर है क्योंकि तेल अब 2022 के बाद अपनी सबसे बड़ी साप्ताहिक वृद्धि की ओर बढ़ रहा है, व्यापारियों के अनुसार गोलडमैन साक्स ने चेतावनी दी है कि कीमतें 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर जा सकती हैं, जबकि जेपी मॉर्गन ने कहा है कि कीमत 120 तक पहुंच सकती है।

भारत पहले ही रूसी कच्चे तेल के दो शिपमेंट्स को खरीद चुका है, जो पास के समुद्र में चल रहे थे।

प्रत्येक टैंकर में लगभग 700,000 बैरल तेल है। एक तीसरा रूसी टैंकर भी अपना रास्ता बदल चुका है और माना जाता है कि वह भारतीय बंदरगाह की ओर बढ़ रहा है।

रॉयटर्स के अनुसार, कुल मिलाकर, लगभग 9.5 मिलियन बैरल रूसी कच्चा तेल वर्तमान में भारत के पास स्थित जहाजों पर है।

वैश्विक स्तर पर, समुद्र में फंसे हुए रूसी तेल की मात्रा कहीं अधिक है। व्यापार खुफिया कंपनी केमरल के आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान में दुनिया भर में लगभग 130 मिलियन बैरल रूसी कच्चा तेल टैंकरों पर मौजूद है।

यूरोपीय सहयोगियों की आलोचना करते रहे हैं कि वे रक्षा पर पर्याप्त खर्च नहीं करते और उन्होंने उनसे सैन्य बजट बढ़ाने की मांग की है। स्पेन अपनी आर्थिक क्षमता की तुलना में नाटो के सबसे कम रक्षा खर्च करने वाले देशों में रहा है और उसने खर्च में बहुत बड़ी बढ़ोतरी करने के दबाव का विरोध किया है। इसलिए ईरान युद्ध को लेकर यह विवाद पहले से मौजूद मतभेदों की पृष्ठभूमि में सामने आया है।

स्पेन का रुख यूरोप में बढ़ती उस बहस को भी दर्शाता है, जिसमें "रणनीतिक स्वायत्तता" (स्ट्रैटेजिक ऑटोनोमी) की बात की जा रही है। कई यूरोपीय सरकारों का मानना है कि यूरोपियन यूनियन को यू.एस. मिलिट्री पहलों के साथ स्वतः जुड़ने के बजाय अपनी इंडिपेंडेंट सिक्यूरिटी और फॉरेन पॉलिसी डेवलप करनी चाहिए। स्पेन उन देशों में से रहा है, जो ग्लोबल डिप्लोमेसी और झगड़े सुलझाने में यूरोप की मजबूत भूमिका की वकालत करते रहे हैं। ईरान के खिलाफ युद्ध से दूरी बनाकर मैड्रिड यह संकेत दे रहा है कि अंतरराष्ट्रीय संकटों में यूरोपीय सहयोगी हमेशा वॉशिंगटन का अनुसरण नहीं करेंगे। फेरलू राजनीति भी इसमें एक अहम कारक है। स्पेन में जनमत विदेशी सैन्य हस्तक्षेपों, खासकर मध्य-पूर्व में, को लेकर काफी संदेहपूर्ण है। मैड्रिड की सत्तारूढ़ गठबंधन सरकार में ऐसे राजनीतिक दल भी शामिल हैं जो युद्ध के कड़े विरोधी हैं और अंतरराष्ट्रीय विवादों का समाधान कूटनीति से करने

चीनी खरीदारों से प्रतिस्पर्धा, जो उसी तेल के लिए बोली लगा रहे हैं, भारत के लिए एक और चुनौती प्रस्तुत करता है।

इस बीच, फेरलू ईंधन आपूर्ति की सुरक्षा के लिए, भारत ने तेल रिफाइनरियों से एलपीजी का उत्पादन अधिकृत करने और इसे तीन राख्य-स्वामित्व वाली इंधन खुदरा कंपनियों: इंडियन ऑयल, हिंदुस्तान पेट्रोलियम और भारत पेट्रोलियम को आपूर्ति करने का आदेश दिया है।

अधिकारियों ने यह भी रिफाइनरियों से प्रोपेन और ब्यूटेन के पेट्रोकेमिकल उत्पादन में भेजने से रोकने के लिए कहा है, जिससे उन्हें औद्योगिक उत्पादन के मुकाबले एलपीजी को प्राथमिकता देने के लिए मजबूर किया गया है। तीन कंपनियों को केवल फेरलू ग्राहकों को ईंधन बेचने का निर्देश दिया गया है।

राख्य-स्वामित्व वाली कंपनियों, जिनमें इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम, हिंदुस्तान पेट्रोलियम और मंगलेश्वर रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल्स शामिल हैं, भी व्यापारियों के साथ रूसी माल की त्वरित डिलीवरी प्राप्त करने के लिए बाध्य कर रही हैं। भारतीय राज्य रिफाइनरियों ने अब तक व्यापारियों से लगभग 20 मिलियन बैरल रूसी तेल खरीदा है।

## अमेरिका के खिलाफ असंतोष ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दिया था। इसके बाद जब समाजवादी नेता होजे लुइस रॉड्रिगेज ज़ापाटो की सरकार सत्ता में आई तो उसने इराक से स्पेनिश सैनिकों को वापस बुला लिया। तब से स्पेन की सरकारों, चाहे किसी भी राजनीतिक दल की ही, मध्य-पूर्व में अमेरिका के नेतृत्व वाले सैन्य अभियानों में शामिल होने को लेकर बेहद सावधान रहती हैं।

यह ऐतिहासिक अनुभव प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज की मौजूदा नीति में भी साफ दिखाई देता है। उनकी सरकार बार-बार कह चुकी है कि इराक जैसी गलतियों को दोहराया नहीं जाना चाहिए। स्पेन के अधिकारियों का कहना है कि मध्य-पूर्व में एकरतारा सैन्य कार्रवाई से अक्सर शांति के बजाय अस्थिरता पैदा हुई है, जबकि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को कूटनीति और तनाव कम करने पर ध्यान देना चाहिए। मैड्रिड और वॉशिंगटन के बीच टकराव में आइडियोलॉजी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सांचेज एक सेंट्रल-लेफ्ट सोशलिस्ट सरकार का नेतृत्व करते हैं, जो बहुपक्षीय सहयोग, अंतरराष्ट्रीय कानून और कूटनीति पर जोर देती है। इसके विपरीत ट्रंप की विदेश नीति अधिक आक्रामक और एकरतारा रही है। इसलिए ईरान को लेकर यह टकराव केलर रणनीति का मतभेद नहीं, बल्कि दोनों सरकारों की सोच में व्यापक अंतर को भी दिखाता है। तनाव का एक और अंदरूनी कारण नाटो के भीतर एक शख खर्च की लेकर चल रहा पुराना विवाद है। ट्रंप बार-बार

दिया था। इसके बाद जब समाजवादी नेता होजे लुइस रॉड्रिगेज ज़ापाटो की सरकार सत्ता में आई तो उसने इराक से स्पेनिश सैनिकों को वापस बुला लिया। तब से स्पेन की सरकारों, चाहे किसी भी राजनीतिक दल की ही, मध्य-पूर्व में अमेरिका के नेतृत्व वाले सैन्य अभियानों में शामिल होने को लेकर बेहद सावधान रहती हैं।

यह ऐतिहा